ISSN:0975-5756

कला - वैभव
KALĀ - VAIBHAV

संयुक्तांक 23-24 (वर्ष 2016-17, 2017-18)
विभागीय शोध- जर्नल (रेफरीड)

प्रधान संपादक
डॉ. मंगलानंद झा
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.)
(नेक द्वारा 'A' ग्रेड प्रत्यायित)

वित्तीय सहयोग : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली

ISSN : 0975 - 5756

कला-वैभव

KALA-VAIBHAVA

रेफरीड जर्नल

संयुक्तांक 23–24 (वर्ष 2016–17, 2017–18)

कला–वैभव

संयुक्तांक 23–24

भारतीय कला, इतिहास, संस्कृति, पुरातत्त्व, साहित्य का वार्षिक शोध जर्नल (रेफरीड)

प्रकाशक : इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.)–491881।

ISSN : 0975 - 5756

प्रधान संपादक : डॉ. मगलानंद झा, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़।

वार्षिक सदस्यता –

व्यक्तिगत – 675/–
संस्थागत – 750/–

विशिष्ट आभार : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली।

कला–वैभव (संयुक्तांक 23–24) में प्रकाशित लेखों/रचनाओं में वर्णित विषय–वस्तु/तथ्यों तथा निष्कर्षों इत्यादि का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व सम्बन्धित लेखकों/रचनाकारों का है। संपादकगण अथवा प्रकाशक की सहमति आवश्यक नही है।

संपर्क :
कुलसचिव – 07820 234232
डॉ. एम.एन. झा – 94241–11394
ई–मेल – kalavaibhav@ iksv.ac.in
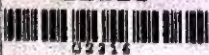
(मुखपृष्ठ–चित्र लज्जा–गौरी, खैरागढ़)।

प्रो. (डॉ.) माण्डवी सिंह
कुलपति
Pro. Dr. Mandavi Singh
Vice-Chancellor

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय
(संगीत, नृत्य एवं ललित कलाओं का विश्वविद्यालय)
खैरागढ़, छत्तीसगढ़ – 491881
INDIRA KALA SANGIT VISHWAVIDYALAYA
UNIVERSITY OF MUSIC, DANCE AND FINEARTS
KHAIRAGARH, CHHATTISGARH - 491 881
Accredited with grade 'A' by NAAC

शुभकामना संदेश

यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ द्वारा शोध–जर्नल कला–वैभव (रेफरीड), संयुक्तांक 23–24 का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस शोध पत्रिका में भारतीय इतिहास, कला, संस्कृति, पुरातत्त्व, साहित्य, लोककला एवं संगीत की विभिन्न विधाओं से सम्बन्धित लेख समाहित हैं। एक ही स्थान पर पृथक–पृथक विषयों से संबंधित लेखों के समावेश से यह जर्नल अध्येताओं, शोधार्थियों एवं कला मर्मज्ञों के लिए उपयोगी तथा संग्रहणीय होगा।

संपादक को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ ...

(प्रो. मांडवी सिंह)

प्रो. डॉ. आई. डी. तिवारी
अधिष्ठाता–कला संकाय

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय
खैरागढ़, छत्तीसगढ़ – 491881
INDIRA KALA SANGIT VISHWAVIDYALAYA
KHAIRAGARH, CHHATTISGARH - 491 881
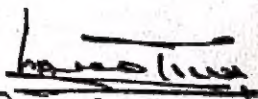
शुभकामना-संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग द्वारा वार्षिक शोध जर्नल कला-वैभव (रेफरीड) संयुक्तांक 23–24 का प्रकाशन हो रहा है।

इस जर्नल में इतिहास, संस्कृति, पुरातत्त्व, संगीत तथा साहित्य आदि विषयों से सम्बन्धित शोधलेख शामिल है, जिससे विद्यार्थियों-शोधार्थियों एवं आगत पीढ़ी का ज्ञान के क्षेत्र में मार्ग प्रशस्त होगा।

संपादक डॉ. मंगलानंद झा को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(प्रो.आई.डी.तिवारी)

कला-वैभव

संयुक्तांक 23–24

अनुक्रमणिका

❖ शुभकामना संदेश

- प्रोफेसर (डॉ.) माण्डवी सिंह,
  कुलपति, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़।
- प्रो. (डॉ.) इन्द्रदेव तिवारी,
  अधिष्ठाता, कला–संकाय।
- श्री पी. एस. ध्रुव,
  कुलसचिव, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़।

❖ सम्पादकीय

- डॉ. मंगलानंद झा,
  प्रधान संपादक।

❖ अनुक्रमाणिका

प्राचीन अभिलेखों का महत्व

मोहन कुमार साहू

भारतीय इतिहास–लेखन में अभिलेखों का महत्त्व सर्वोपरि है। उनके उत्कीर्ण कराने के उद्देश्य विविध थे। बहुत ऐसे अभिलेख हैं जिनमें वंशावली एवं ऐतिहासिक घटनाओं के साथ महान शासकों की उपलब्धियों का भी वर्णन मिलता है उदाहरण के लिए खारवेल का हाथीगुम्फा –अभिलेख और समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति ऐसे प्रलेख हैं जिनमें सम्पूर्ण जीवन चरित्र का वर्णन मिलता है। इनके अलावा हमें भारतीय इतिहास के विविध पक्षों का ज्ञान प्राप्त होता है। अभिलेख इतिहास जानने के प्रमुख साधन है, जिससे बीते समय की कला संस्कृति के बारे में जानकारी मिलती है। राजनीतिक इतिहास,सामाजिक स्थिति, आर्थिक दशा, धार्मिक इतिहास, साहित्यिक विवरण, अभिलेखों की भाषा, भौगोलिक वर्णन आदि विविध पक्षों का ज्ञान हमें अभिलेखों से प्राप्त होता है।

राजनीतिक इतिहास का महत्त्व– इसमें हमें सम्राटों के वंशवृक्ष के बारे में जानकारी मिलती है। उत्कीर्ण अभिलेखों से वंशावली की जानकारी (रूद्रदामा के जूनागढ़ अभिलेख से तीन पीढ़ियों की जानकारी) प्राप्त होती है। इसी प्रकार से गुप्तवंश के अभिलेखों में भी वंशावली के उल्लेख करने की परम्परा पूर्णता की ओर पहुँच गयी। समुद्रगुप्त की प्रयाग–प्रशस्ति और स्कन्दगुप्त के भितरी स्तम्भ लेख में गुप्त वंशावली का वर्णन मिलता है। प्रभावती गुप्ता का पूना ताम्रपत्र अत्यन्त रोचक है। उसमें वाकाटक वंशावली के स्थान पर अपने पिता की वंशावली का वर्णन किया गया है। हर्षवर्द्धन के बांसखेड़ा ताम्रपत्र को देखें तो नरवर्द्धन से लेकर हर्षवर्द्धन तक के शासकों और उनकी रानियों के नाम मिलते हैं। चालुक्य नरेश पुलकेशीन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख और पालवंशी धर्मपाल के खालिमपुर ताम्रपत्र में भी वंशावलियों का वर्णन मिलता है।

अभिलेखों में युद्ध गाथा का वर्णन – अशोक के 13वें शिलाप्रज्ञापन से पता चलता है कि कलिंग युद्ध में विजयी होकर उसने अहिंसा का मार्ग अपनाया था। धनदेव के अयोध्या अभिलेख में पुष्यमित्रशुंग को दो अश्वमेघ यज्ञों का कर्ता बताया गया है। खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख में सम्राट् के प्रतिवर्ष की मुख्य घटनाओं का वर्णन है। सातवाहन काल में गौतमीपुत्र सातकर्णि तथा क्षत्रप नहपान के मध्य हुए भीषण संघर्ष की जानकारी नासिक अभिलेख से हुई है। रूद्रदामा के जूनागढ़ अभिलेख,यशोधर्मा के मंदसौर अभिलेख तथा हूण नरेशों के अभिलेखों से उन शासकों की महत्त्वपूर्ण विजयों पर पर्याप्त प्रकाश पड़ा है।
अभिलेखों में वर्णित राज्य सीमाएँ– अभिलेखों से सम्राट के प्रभाव क्षेत्र का पता चलता है। मौर्य शासक अशोक के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि भारत का अधिकांश क्षेत्र उसके साम्राज्य के अन्तर्गत था। दूसरे व 13वें अभिलेखों से सीमावर्ती शासकों का उल्लेख मिलता है। सातवाहन वंश के अभिलेखों व सिक्कों से सातवाहन साम्राज्य की सीमा को निर्धारित किया जा सकता है। कुषाण वंश का शासन पेशावर से मथुरा तक फैला हुआ था। गुप्तवंश

के अभिलेख में समुद्रगुप्त की प्रयाग–प्रशस्ति में आर्यावर्त और दक्षिणा पथ का वर्णन मिलता है। इनके अलावा कुमारगुप्त प्रथम के मंदसौर – अभिलेख में सीमाओं का वर्णन मिलता है।

शासन व्यवस्था एवं शासन – प्रणाली का कुशल संचालन –

प्राचीन समय में किस प्रकार शासन किया जाता था, जिसकी जानकारी अभिलेखों से मिलती है एवं कुछ अभिलेखों में पदाधिकारियों के नाम भी उत्कीर्ण मिलते है। जैसे – राजा, राजानक, अमात्य, राजामात्य, कुमारामात्य, सामन्त, सेनापति, विषयपति, भोगपति, दण्डपाशिक, बलधिकृत, दण्डनायक, धर्ममहामात्र, विषयव्यवहारिन्, महादण्डनायक आदि। शासन–प्रणाली दो प्रकार की थी, राजतन्त्र और प्रजातन्त्र। राजतन्त्र में राजा का बेटा राजा होता था जो आदर्श शासक सदैव प्रजा हित का ध्यान रखते थे। द्वितीय लेख में सम्राट् अशोक कहता है : ''सारे मनुष्य मेरे संतान हैं और जिस प्रकार मैं अपनी संतति को चाहता हूँ कि वह सभी प्रकार की समृद्धि और सुख इस लोक और परलोक में भोगे, ठीक उसी प्रकार मैं अपनी प्रजा के सुख – समृद्धि की भी कामना करता हूँ। रूद्रदामा के जूनागढ़ अभिलेख और स्कन्दगुप्त के उसी स्थल में प्राप्त अभिलेख से शासकों की प्रजावत्सलता पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

दूसरे प्रकार की शासन–प्रणाली प्रजातंत्रात्मक थी। इसके लिए अभिलेखों तथा साहित्यों में गण या संघ नाम मिलता है। प्राचीन सिक्कों से भी मालव, आर्जुनायन, औदुम्बर, यौधेय, कुणिन्द, आभीर, मद्रक आदि प्रजातान्त्रिक शासन प्रणाली का पता चलता है।

कुछ ऐसे भी अभिलेख है जिसमें प्राचीन समय की सामाजिक स्थिति का पता चलता है। धर्मशास्त्र के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार प्रमुख वर्ण बताये गये है। भारतीय अभिलेख में विशेष रूप से वर्णाश्रम धर्म पालन की बात कही गई है। शासन या दान के प्रसंग में वर्णों का उल्लेख मिलता है। अशोक के शिलालेखों में बाह्मणों तथा श्रमणों को दान देना श्रेयष्कार बताया गया है। हर्ष के बांसखेड़ा ताम्रपत्र में वर्णाश्रम व्यवस्थापन प्रवृत्त पद का उल्लेख मिलता है।

समाज में बहुत प्रकार के लोग रहते है पूर्वमध्यकालीन अभिलेखों से ज्ञात होता है कि कायस्थ लोग मुख्यतः लेखन का कार्य करते थे।

कलचुरि शासक कर्णदेव के गढ़वा – तामपत्र में चार आश्रम संस्थाओं का उल्लेख मिलता है। जिसमें ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। प्रतिहार भोज के अभिलेख में एक ब्रह्मचारी का उल्लेख मिलता है। गुर्जर प्रतिहार वंशी तात नामक शासक संसार को नाशवान समझकर अपने अनुज को राज्य सौंपकर जंगल चला गया। कलचुरि नरेश गांगेयदेव ने अपनी सौ रानियों के साथ प्रयाग में आत्म – विसर्जन किया। चँदेलशासक धंग ने सौ वर्ष की आयु पूर्णकर संगम में शरीर त्याग किया और संगम पर मृत्यु – वरण को अत्यन्त्र पवित्र माना गया था। कुछ अभिलेखों में बहुपत्नीत्व का पता चलता है। प्रजा

एक पत्नी व्रत पालन श्रेयस्कर मानती थी। प्रतिहार नरेश हरिश्चंद्र की दो पत्नियाँ थीं। गाहड़वाल नरेश गोविंदचंद्र ने पाँच राजकुमारियों से विवाह किया था। सबसे रोचक उदाहरण गांगेयदेव कलचुरि का है जिसके सौ विवाहों का उल्लेख मिलता है। अभिलेख से सतीप्रथा का उल्लेख भी मिलता है, जैसे– भानुगुप्त का स्तम्भ लेख जो एरण (सागर) से प्राप्त हुआ है।

प्राचीन भारतीय नागरिक सभ्यता में गणिकाओं का विशेष अस्तित्व था उनके साथ संगीत, महोत्सव का भी सम्बन्ध रहा है। समाज में संगीत, नाट्यो आदि के आयोजन होते रहते थे। मौर्यशासक अशोक ने अपने प्रज्ञापनो में प्रजा को "समाजों" से दूर रहने को कहा है। गीत गाती हुई या नृत्य करती हुई प्रमदाओं का अंकन प्राचीन कला में बहुतयत से प्राप्त होता है। 12वीं शती के एक चाहमान – अभिलेख से पता चलता है कि वेश्याओं पर कर लगाया जाता था इस प्रकार गणिकाएँ समाज की एक महत्वपूर्ण अंग थी।

अभिलेखों में वर्णित आर्थिक दशा :– किसी भी राज्य के लिए आर्थिक स्थिति का मजबूत होना महत्वपूर्ण माना जाता है, जिससे की समृद्धि व विकास हो। इसके बिना साम्राज्य की प्रजा व पदाधिकारियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना सम्भव नहीं है। प्राचीन भारत में तत्कालीन आर्थिक स्थिति का पता विभिन्न युगों के अभिलेखों से चलता है। सोने के सिक्के वही राज्य चलाते थे जो आर्थिक दृष्टि से समृद्ध थे, राज्य में शांति का संचार करते थे। जिससे देश – विदेश में व्यापारिक संबंध स्थापित होते थे। स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख में कहा गया है कि उसके समय साम्राज्य में कोई आर्त, दरिद्र और दुःखी न था। भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है। सिंचाई हेतु समुचित प्रबंध करते थे। झीलों की नहरों, तालाबों तथा बाँधों के माध्यम से सिंचाई की जाती थी। रूद्रदामा के जूनागढ़ अभिलेख से विदित होता है सुदर्शन नामक झील (तड़ाग) का निर्माण चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में हुआ। रूद्रदामा के शासनकाल में बाँध टूट गया फिर मरम्मत करायी गई। खारवेल के हाथी गुम्फा अभिलेख से ज्ञात होता है कि राज्याभिषेक के पाँचवे वर्ष राजधानी तक नहर लायी गयी थी। दक्षिण के सातवाहन – नरेश पुलमावी के शासनकाल में सिंचाई के लिए तालाबों का निर्माण कराया गया। इस प्रकार से सिंचाई के विभिन्न साधनों के बारे में हमें प्राचीन भारतीय अभिलेखों से ज्ञात होता है।

अभिलेखों में धार्मिकता का वर्णन :–प्राचीन भारतीय लेखों के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि अधिकांश अभिलेखों के माध्यम से धार्मिक भावना का प्रचार किया गया और अभिलेखों के आरंभ में अपने इष्टदेव की स्तुति करता है। भारतीय संस्कृति में सभी धर्मों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। विविध धर्मों को मानने वाले लोग अपने व अन्य धर्मों के प्रति भी श्रद्धा और सहिष्णुता रखते थे। बौद्धधर्म के अनुयायी अशोक ने अपने अभिलेखों में बौद्धधर्म का प्रचार किया है। सारनाथ लघुस्तम्भ लेख से ज्ञात होता है कि अशोक संघ की एकता का प्रबल समर्थक था। कुषाण काल में कनिष्क प्रथम के कुर्रम ताम्र मंजुषा अभिलेख में बौद्ध दर्शन की चर्चा की गई है। सातवाहन नरेश वासिष्ठीपुत्र पुलुमावि के

नासिक गुहालेख से ज्ञात होता है कि बौद्ध–भिक्षुओं को एक गुहा शासन की ओर से भेंट की गई।

गुप्तकाल में चन्द्रगुप्त द्वितीय के साँची अभिलेख, कुमारगुप्त प्रथम का मानकुंवर प्रतिमा लेख, कुमारगुप्त द्वितीय के सारनाथ बुद्ध मूर्तिलेख एवं बुधगुप्त के सारनाथ बुद्ध प्रतिमालेख आदि अभिलेखो में बौद्ध धर्म का वर्णन मिलता है। आने वाले शासकों में भी ये निरंतरता देखने को मिलती है। ई.पू. छठी शती में भगवान स्वामी महावीर द्वारा जैनधर्म के प्रचार के पश्चात् देश में इस धर्म का व्यापक प्रसार हुआ। अशोक के प्रज्ञापनों में इस धर्म के लिए निग्रंथ शब्द मिलता है। खारवेल का हाथीगुफा अभिलेख के प्रारंभ में 'नमो अरहंतानं' से होता है और खारवेल की रानी मंचपुरी के गुहालेख से ज्ञात होता है कि उदयगिरि पहाड़ियों पर कलिंग देश के जैन भिक्षुओं के लिए गुहाओं का निर्माण करवाया था। जयदामा के पौत्र के जूनागढ़ प्रस्तर अभिलेख में जरा–मरण से मुक्त होकर कैवल्य ज्ञान प्राप्त करने का उल्लेख है। बुधगुप्तकालीन पहाड़पुर–ताम्रपत्र, स्कन्दगुप्त कालीन कहौम लेख, आदि लेखो में बौद्ध धर्म का दर्शन होता है।

पूर्वमध्ययुगीन राजवंशों में भी यह देखने को मिलता है, जैसे– चाहमानशासक सोमेश्वर के बिझौली प्रस्तर – अभिलेख, से ज्ञात होता है कि दिगम्बर मतानुयायी लोलाक ने 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के एक मंदिर का निर्माण किया।

वैदिक धर्म–आर्यों के द्वारा प्रतिपादित धर्म को वैदिक धर्म कहा जाता था। अन्य धर्मों के साथ साथ वैदिक कालीन धर्म को शासकों ने अपने अभिलेखों में स्थान दिया है। राजा सर्वतात् के घोसुण्डी प्रस्तर अभिलेख से अश्वमेध यज्ञ किये जाने का उल्लेख है। सातवाहनों, क्षहरातों, शक, क्षत्रपों एवं इक्ष्वाकु राजाओं के अभिलेखों में ब्राह्मणों को दिये जाने वाले दानों का वर्णन मिलता है। नहपान कालीन नासिक गुहालेख से ब्राह्मणों को 16 वाँ गाँव दान देने की जानकारी मिलता है।

वैष्णवमत – वैष्णव मत को पांचरात्र तथा भागवत धर्म भी कहा गया है। यह धर्म प्राचीन भारतीय अभिलेखों में भी देखने को मिलता है सबसे पहला उदाहरण हमें बेसनगर गरूड़–ध्वज स्तंभ–लेख से प्राप्त होता है। सातकर्णिप्रथम तथा गौतमीपुत्र यज्ञसातकर्णि के क्रमशः नानाघाट और चिन्नगंजाम अभिलेख से ज्ञात होता है कि भागवत धर्म दक्षिण भारत में भी फैल चुका था। गुप्तकालीन शासकों में चंद्रगुप्त द्वितीय के मेहरौली स्तम्भलेख, प्रभावतीगुप्ता के रिद्धपुर अभिलेख, इन्ही के पूना ताम्रपत्र, आदि अभिलेखों से ज्ञात होता है कि वे वैष्णव धर्म के अनुयायी थे।

इसी तरह से प्राचीन भारतीय अभिलेखों में शैव सम्प्रदायों का भी साक्ष्य मिलता है, जिससे स्पष्ट होता है कि शासक वर्ग धर्म को लेकर कितना जागरुक थे। सिन्धुघाटी सभ्यता के लोग पशुपति तथा शिवलिंग की पूजा करते थे। उज्जयिनी के अनेक शुंगकालीन सिक्कों पर शिव के विविध रूप अंकित है। समुद्रगुप्त के प्रयाग–प्रशस्ति से

पशुपति के जटाजूट से गंगा के निकलने का ज्ञान होता है। चंद्रगुप्त द्वितीय मथुरा स्तम्भ लेख और इसी सम्राट् के उदयगिरि गुहालेख से ज्ञात होता है कि उदयगिरि (विदिशा) में गुहा का निर्माण कराया। कुमारगुप्त प्रथम के करमदण्डा प्रस्तर लिंग अभिलेख से विदित होता है कि गुप्तयुगीन जनता शिव की धर्म यात्रा निकालते थे। हर्ष के मधुवन ताम्रपत्र में हर्ष को परममाहेश्वर (शिव का परम भक्त) कहा गया। हूण नरेश मिहिरकुल भी शिव का भक्त था। नारायणपालदेव के भागलपुर ताम्रपत्र से विदित होता है कि उसने एक हजार शिव–मंदिर बनवाए थे। इसी प्रकार विजयसेन के देवपाड़ा अभिलेख से ज्ञात होता है कि शिव–मंदिर बनवाया और बहुत से अभिलेखों में भगवान शिव के साक्ष्य प्रमाणित होते है।

शैव और वैष्णव सम्प्रदाय के साथ– साथ शाक्त सम्प्रदाय का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन भारतीय इतिहास में मातृशक्ति का सर्वोच्च स्थान था। देवी शक्ति के बिना संसार अधूरा है। पूर्वमध्यकालीन अभिलेखों में शक्ति के उग्र रूप में दुर्गा पूजा का वर्णन मिलता है। गुर्जर प्रतिहार लेख, महिषमर्दिनी देवी की प्रार्थना से आरंभ होता है।

सूर्य एक वैदिक कालीन देवता है, सूर्य–प्रकाश के बिना इस संसार में जीवन सम्भव नहीं है। सूर्य के प्रकाश से ही ये संसार चलायमान है। देवी–देवताओं के साथ सूर्य देव की भी आराधना होती रही है। प्राचीन भारतीय अभिलेखीय साक्ष्यों में विदित होता है कि कुमारगुप्त प्रथम तथा बन्धुवर्मा के मंदसौर अभिलेख से ज्ञात होता है कि दशपुर में सूर्य मंदिर का निर्माण कराया और इस मंदिर के क्षतिग्रस्त होने पर उन्होने उसका जीर्णोद्धार कराया। स्कन्दगुप्त के इन्दौर लेख से सूर्य मंदिर में दीप जलाने के संकेत मिलते हैं। महराज सर्वनाथ के खोह ताम्रपत्र लेख से ज्ञात होता है कि नरेश ने आश्रमक स्थित सूर्य मंदिर के लिए दान दिया। हूण नरेश मिहिरकुल के 15वें शासन वर्ष एक सूर्य मंदिर का निर्माण हुआ। वर्द्धनवंश राज्यवर्द्धन प्रथम, आदित्यवर्द्धन, प्रभाकरवर्द्धन आदि शासक सूर्य भक्त बताए गए है।

अभिलेखों की भाषा – मानव मन की अभिव्यक्ति का एक अच्छा माध्यम भाषा है। भाषा के माध्यम से हम अपनी बात दूसरे तक पहुंचा सकते है। अभिलेखों को उत्कीर्ण करवाने के लिए भाषा की आवश्यकता हुई जिसके माध्यम से शासक अपना संदेश प्रजा तक पहुंचाते थे। इस तरह से लिपि व भाषा का विकास हुआ। अशोक के अभिलेखों में पालि प्राकृत, मागधी भाषा का प्रयोग मिलता है। धौली, जौगड़, और एरागुड़ी शिलाप्रज्ञापन मागधी भाषा में लिखवाये गए, शहबाजगढ़ी मानसेहरा, अभिलेखों में संस्कृत भाषा का प्रयोग किया गया है।

खारवेल हाथीगुम्फा अभिलेख और पुलमावि के उन्नीसवें राज्यवर्ष का नासिक गुहालेख आद्य प्राकृत में लिखे गए।

हेलियोदोरस का बेसनगर स्तंभलेख जिसमें संस्कृत तथा साहित्यिक प्राकृत का कुछ प्रभाव दर्शनीय है। बहुत से अभिलेख ऐसे है जो कई भाषाओं में उत्कीर्ण कराए गए हैं। वे ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

निष्कर्ष – लेख का सार यह है कि प्राचीन भारतीय अभिलेख हमारे लिए क्यों महत्त्वपूर्ण हैं। इनकी क्या उपयोगिता रही होगी? इन अभिलेखों के माध्यम से राजा अपने संदेश प्रजा तक पहुँचाते थे। इन अभिलेखों से अतीत कालीन सामाजिक, राजनीतिक , आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्रों का पता चलता है, जो भावी पीढ़ी के लिए मार्गदर्शन करते हैं और इतिहास जानने के प्रमुख साधनों के रूप में प्रयुक्त होते हैं। इसलिए प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक तत्वों की उद्भावना में अपना विशिष्ट्य मौलिक स्थान रखते है। प्राचीन अभिलेखों से अनुशीलन से हमें महत्वपूर्ण इतिहास परख प्रामाणिक अभिलेखीय जानकारियाँ मिलती है।

संदर्भित ग्रंथ–

1. वाजपेयी , के.डी., ऐतिहासिक भारतीय अभिलेख (पृष्ठ क. 35 से 57 तक), पब्लिकेशन स्कीम, जयपुर, 1992।
2. गोपाल,श्रीराम, प्राचीन भारतीय अभिलेख संग्रह, राजस्थान हिन्दी प्रकाशन ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
3. फ्लीट, जान फेथकुल, भारतीय अभिलेख संग्रह, राजस्थान हिन्दी गंथ अकादमी, जयपुर।